आरती श्री कबीर जी की (प्रभाती)

सुन संधिया तेरी देव देवाकर, अधिपति आदि समाई ।
सिध समाधि अंतु नहीं, पाय लागि रहे सरनाई ।।
लेहु आरती हो पुरख निरंजनु, सतिगुरु पूजहु भाई ।
ठाढा ब्रह्मा निगम विचारे, अलख न लखिया जाई ।।
ततुतेल नामकिआ बाती, दीपक देह उजियारा ।
ज्योति लाइ जगदीस, जगाया बूझैं बूझनहारा ।।
पंचे सबद अनाहद बाजे, संगे सारिंग पानी ।
कबीर दास तेरी आरती, कीनी निरंकार निरबानी ।।
याते प्रसन्न भये हैं महामुनि, देवन के तप में सुख पावें ।
यज्ञ करै इक वेद रहै, भवताप हरे मिल ध्यान लगावै ।।
झालर ताल मृदंग उमंग रबाब लीए सुरसाज मिलावै ।
किन्नर गंधर्व गान करै गणगच्छ, अपच्छर निरत दिखावै ।।
संतन की धुन घंटन की, कर फूलन की बरखा बरखावै ।
आरती कोटि करै सुर सुन्दर, पेख पुरंदर के बलि जावै ।।
दानति दच्छन दैके प्रदच्छन, भाल में कुंकुम अच्छत लावै ।
होत कुंलाहल देवपुरी मिलि, देवन के कुल मड्गल गावै ।।
हे रवि हे ससि हे करुणा निधि, मेरी अबै बिनती सुन लीजै ।
और न मांगत हउ तुम ते कछु, चाहत हों चित में सोई कीजै ।।
शस्त्रन सों अति ही रण भीतर, जूझ मरौ तउ सांच पतीजै ।
संत सहाइ सदा जग माइ ,कृपा कर श्याम इहै वर दीजै ।।
पांइ गहे जबते तुमरे तबते, कोऊ आंख तेरे नहीं आन्यो ।
राम रहीम पुरान कुरान, अनेक कहै मत एक न मान्यो ।।
सिमरत शास्त्र बेद सबै बहु भेद, कहै सब तोहि बखान्यो ।
श्री असि पान कृपा तुमहरी करि, मैं न कहयो हम एकन
जान्यो ।।

दोहा

सगल दुआर कउ छांडि कै गहियो ,तुम्हारो दुआर ।
बाहिं गहे की लाज अस गोविंद दास तुम्हार ।

ऐसे चंड प्रताप ते देवन बढ़ियो प्रताप ।
तीन लोक जय जय करें रहे नाम सति जाप ।
चतर चक्रवर्ती चतरतक्र भुगते ।
सुयंभव सुभ सरबदा सरब जुगते ।।
ढुकालं प्रणासी दयालं सरूपे ।
सदा अंगे संगे अभंगं विभूते ।।

विवरण

हे संधिया ! सभी देवता आकर आपके हृदय में समा जाते हैं । आपके सिद्धि एवं समाधि का कोई अन्त नहीं है, हम आपको सिर नवाकर प्रणाम करते हैं । हमारे पुरुख एवं सच्चे हृदयवाले गुरु, हम आपकी पूजा करते हैं । आप हमारी आरती को स्वीकार करो । ब्रह्म भी खड़े होकर आपका विचार करते हैं, क्यों कि आप की महिमा बखान करने योग्य नहीं है ।

भगवान ने आपके नाम रूपी बाती को आपके शरीर रूपी दीपक से उजियारा कर दिया । आपके बुझे हुए शरीर को आपके नाम रूपी ज्योति से भगवान ने आपको जगा दिया । आपके पंच शब्द रूपी नाम का बाजा बज गया । हम आपकी आरती निरंकार रूप से करते हैं । महा मुनि लोग आपसे अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा देवताओं के तप में अत्यन्त सुख पहुँचा ।

जो आपकी सेवा करता है, तथा ध्यान लगाता है, उसके आप सभी दुःख दूर करते हैं । झालर, ताल एवं मृदंग बज रहे हैं तथा गंधर्व एवं किन्नर आपके गुणों का गान कर रहे हैं, तथा संतो की आवाज गूँज रही है, घंटों की ध्वनि बज रही है तथा उनके हाथों से फूलों की वर्षा हो रही है एवं अनेक प्रकार से आपकी आरती कर रहे हैं तथा आप पर बलिहारी हो रहे हैं । दान- दक्षिणा देकर एवं आपकी प्रदक्षिणा करके अपने माथे पर तिलक एवं अक्छत लगा रहे हैं ।

देवता लोक में शोर मचा हुआ है तथा सभी देवतागण मिलकर मंगल गान गा रहे हैं ।हे सूर्य! हे चन्द्रमा! हे दया के सागर ! अब मेरी विनती को सुन लो । हम आपसे कुछ नहीं माँगेंगे - आपके जो जी में आये, वही कीजिएगा । हमारे मन के भीतर बहुत बड़ा युद्ध चल रहा है कि मैं आपके दरबार में मर जाऊँगा पर, आप मेरी लज्जा रखिएगा ।

संत हमेशा इस जग के सहायक होते हैं, आप हम पर कृपा करके यही आशीर्वाद दीजिए । आप राम भी हैं और रहीम भी हैं, आपकी पुराणों में भी चर्चा है एवं कुरान में भी है । आपके बारे में अनेक मत हैं पर हम एक नहीं मानते। शास्त्र एवं वेद आपके यश का गान करते हैं तथा आपका बखान करते हैं । आपकी
कृपा आप ही जानते हैं हम न तो कह सकते हैं न जान सकते हैं ।

दोहा

सभी द्वारों को छोड़कर हम आपके द्वार पर आये हैं, आप हमारी लाज को रखिएगा क्योंकि यह गोविंद दास आपका है । आप ऐसे तेजस्वी हो जिससे देवताओं का भी तेज बढ़ता है । सार्वभौम राजा के समान निपुण, एवं चतरचक्र को भुगतने वाले, अपने सुन्दर यश से सम्पूर्ण जग का हमेशा शुभ करने वाले, हमारे प्राणों मे प्रवेश करने वाले तथा दया का स्वरूप वाले कबीर दास का अंगों के साथ उनका ऐश्वर्य भी समाप्त हो गया ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.